[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
दोहा [illegible]
[illegible] ॥६
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दोहा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

४

पुनि लय बालि जुगल कपि निज ॥ उतन हरी नगि न्हप्र हानगान ॥
तैहि छिनि पन कुलिपकु हिरोई ॥ पुनि पिन प्रभ हु जयोत हुन्नाई ॥
कुतिसहतत हमोई तजेवास ॥ कुतिमजितक हुगयोसु पास ॥
सुजितकनि कुतं हनि पिलाइ ॥ हॅपिकु हि जि यतो मववेताइ ॥
कुतिहि बिसावचनतमनसाही ॥ जिह्व कपसजिनायत हा ही ॥
तैहि सनकहि गैंधलवति हासी ॥ कुतिमतं गओ कृयतेवास ॥
तो गिरिसजवबालिमलाघा ॥ कुतिमतं गकेनासुमलावा ॥
जेहि हुकुसिसनमलावा होई ॥ जितिपनमछेत सिसधिकुहोई ॥
दोहा ॥ हिन्हस्तापकु तिकोयपकपि ॥ मनतहि फिन्हु दियमान ॥
बालिताम्नतिनि हॅप्यतः होई जाई हितकु धान ॥१०॥
तैहि उनते [illegible] ॥ तिनिकें वसतामतिनाइ पयात ॥

[illegible] बालि [illegible]
[illegible]
जे न मित्र दुख होहि दुखारी। तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥
निज दुख गिरि सम रज करि जाना। मित्रक दुख रज मेरु समाना॥
जिन्ह कें असि मति सहज न आई। ते सठ हठि कत करत मिताई॥
कुपंथ निवारि सुपंथ चलावै। गुन प्रगटै अवगुनहि दुरावै॥
देत लेत मन संक न धरई। बल अनुमान सदा हित करई॥
बिपति काल कर सतगुन नेही। स्रुति कह संत मित्र गुन एही॥
आगें कहै मृदु बचन बनाई। पाछें अनहित मन कुटिलाई॥
जा कर चित अहि गति सम भाई। अस कुमित्र परिहरेहि भलाई॥
दोहा [illegible]

जकें कतबसप्रेंमनहीः बिनु नैंहुनैनताभाताही ॥ ६

सेवक सठ नृप कृपन कुनारी। कपटी मित्र सूल सम चारी॥

सखा सोच त्यागहु बल मोरा। सब बिधि घटब काज मैं तोरें॥

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा। बालि महाबल अति रनधीरा।

दुंदुभि अस्थि ताल देखराए। बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए॥

देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती। बालि बधब इन्ह भइ परतीती।

बार बार नावहि पद सीसा। प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा।

उपजा ग्यान बचन तब बोला। नाथ कृपाँ मन भयउ अलोला।

सुख संपति परिवार बड़ाई॥ सब परिहरि करिहौं सेवकाई

ए सब राम भगति के बाधक। कहहिं संत तव पद अवराधक

सत्रु मित्र सुख दुख जग माहीं। माया कृत परमारथ नाहीं।

[illegible]

सोन भुपिन्ह हिं मन [illegible] । समता छाड कहा [illegible]
दोहा । कहा बालि कछु मुनि प्रिय: [illegible]
जो कहा सो हिमानि है: तो [illegible]
[illegible] कहि प्रलाप [illegible] । [illegible]
बालि हि [illegible] । हिंदै [illegible]
[illegible] बालि [illegible] । [illegible]
[illegible] होइ [illegible] । [illegible]
सो जो कहा [illegible] कृपाला । [illegible] होइ होइ [illegible] कपाला
[illegible] । ते हि [illegible]
[illegible] । [illegible]
सो [illegible] । [illegible]

छिनाला

[redacted]क पिथि जाई जनाई । चित पञ्चो हृदय हिन छुनाई ॥

दोहा व कुछ लव लकु छिय कनि: हिहाँ हनि जइ जाति

जनावाजि नाम तव: हिंदै जाहु स्न नताति ॥ ७

पन थिक ल ज हि स न फे लागाँ कृति छठि ज्यें हैं पिवृच्छ क्रगाँ

स्याम गात स्नि नर्ज हाय नाइ । क्रतु न न इ न स्न न याप प ठाइ ॥

कुनि पुनि चितै मन नाचित दीक्र कुपर लजि नाम ठाव वृच्छ फहु मिळ

हियाँ प्रिति कुप्प व प्र न क ठीन । पोला चित ई नाम पियो नाग ॥

घर्म हेतु क्राय तर्व हु ग सा ई । पावे कुसो हि व्याध पिजा ही ॥

जैसे नि कुछि व पिया नाग ॥ फनाछ फ यह ना ल नो हि मान ॥

क्र कुर्ज य यु जा गा निकु ताजा नी कुन्तु मर्छ पै फव्या सम मानी

शठा हि कुड्ढि स्मी थिलो जो जो ई ता हि ल ज कु जाता हो ई ॥

मुंछे तो हिञ्ञ तिसयञ्ञ गिजाण नाली सिप्यापतणन सितफा॥

ञाञ्ञजिवलञ्ञाखित तैंजाणी जनाय हू सिञ्ञयणञ्ञजिणाणी

नाभपकहाजिय नि निभ हार्डी तवसिननणा गन हासञ्ञमाक्री

घरणयुकवडु यियमा निणहिवोला पुनित वडणायमणञ्ञसवोला।

दोहा ञ्ञणञ्ञनाणरञ्ञामा: मलनमाञ्ञनिजोनि

बृञ्ञञ्ञजिडु जै पापी: जंतफाजगणितोनि

ञ्ञणतनाणञ्ञतिफोणजवाणी ञ्ञ जिनिसयञ्ञ तिनिघ्ञी

ञ्ञमयलफनौतणनाप्यौबृणा यानिकहाञ्ञणु ञ्ञ पाणियाणा

जञ्ञजिणञ्ञ तिजिणणकनाई जंतफाजफहिञ्ञ बृतणाहि

जोञ्ञणामवलसंफ़नफासी: हैतसवहिसणगतिञ्ञयिनासी

ञ्ञजोमणणगोमनञ्ञोञ्ञञ्ञ: यकुनिञ्ञबृञ्ञञ्ञवतिहयणाञ्ञ

दोहा रामचरनदृढप्रीतिकरी बालिकिन्हतनत्याग॥
सुमनमालजिमिकंठते गिरतनजानतनाग॥

रामबालिनिजधामपठावा। नगरलोगसबब्याकुलधावा॥
नानाबिधिबिलापकरतारा। छूटेकेसनदेहसँभारा॥
पुनिपुनितातुसिरउरधरनयन। बदनबिलोकिजालसिरहनत॥
मैंपतितोहिबहुतसमुझावा। कालबिबसकछुमनहिनआवा॥
अंगदकहँकछुकहहुबुझाई। पियहिसुनतपुनिप्रानपठाई॥
ताराबिकलदेखिरघुनाथा। दीन्हग्यानहरिलीन्हिमाया॥
छितिजलपावकगगनसमीरा। पंचरचितअतिअधमसरीरा॥
प्रगटसोतनतवआगेंसोवा। जीवनित्यकेहिलगितुम्हरोवा॥
उपजाग्यानचरनतबलागी। लीन्हेसिपरमभगतिबरमागी॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दोहा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

७

भुजिस्तुतिरघुबीर्कौं बोला। चतुमुखकान कियबिनिति किन्पा॥३॥
कहस्तुतियस्मनकुंन छुनाया। म लिनगानकाबपिजैहा या
कहभ्रकस्तुकस्तुतियकबिना भुनंतर्गिहस्मानीयनिस्ना
गानगिप्पमबनप्पनितुक्ला॥ नाहिहोतिकहसाधलपनजा॥४॥
नंगहस्नाहितकुकुमार्गु संतनहिर्दैघनकुजकपकार्जु
जवकुशीरघनहिपिरनिन्नाइ नामपबुधनकि निपनघ्राइ॥
दोहा भ्रप्पमहिदेवकुहिनिमुहनाप्पेनिकुमिवना १५
नामभ्रिपातिथिकजुकहिनबासनकनहिंन्नाइ
सुंदनयनपकुस्तुमितान्नातिक्षोन गुंजतमधुपनिफनमनलोना।
कंहबूलपरलपन्नस्नोहाया जभ्यकुतर्जवतेप्रकुन्नाइन।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दोहा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दोहा कबहु प्रबल बह मारुत जहां तहं मेघ बिलाहि
जिमि कपूत के उपजे कुल सद्धर्म नसाही
दोहा कबहु दिवस महि निबिड तम कबहुक प्रगट पतंग
उपजै बिनसै ग्यान जिमि पाय कुसंग सुसंग ॥१५॥
बरषा बिगत सरद रितु आई लछिमन देखहु परम सोहाई॥
फूले कास सकल महि छाई जिमि बरषा कृत प्रगट बुढाई॥
उदित अगस्त पंथ जल सोषा जिमि लोभहि सोषै संतोषा॥
सरिता सर निर्मल जल सोहा संत हृदै जस गत मद मोहा॥
रस रस सूख सरित सर पानी ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी॥
जानि सरद रितु खंजन आए पाय समय जिमि सुकृत सोहाए॥

४ श्रीकींथ

तुजीय हस्तु घि जो कि घिसानी पाड़ानाजकोसनुनबानी

त हिसाघ़कतानाजैं वाली॰ तै हि सन हतौ भूळे तकाली

ामस्तु क्रिपाहु हैं मह मो हा॰। ताक हळ मा किसपळेतुको हा

ाताहिय़ ह मनित्रजु नि ऽयाली जिब्हनबु थिनमनतनतमाली

नधिमत क्रोथवं तम्रजुजाता घनुष्यमठेय़गहैंफनवाता

ोहा तवकनबुजहिसाबुह्राहैळनबुपतिकनुनासीव़

नायहैंप्याय़लैंक्याय़हु ताससप्यासुभीय़॰।

ाहापयतासुत हिंहैं विमाना नामकाजसुभीय़विमाना

तोफहजाय़मवनबहु रिवनताय़। मानिहु पिधितै हिकाहिसहुळ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नायचरनसिरकहकरजोरी। नाथमोहिनहिकछुखोरी॥

अतिसयप्रबलदेवतवमाया। छूटैरामकरहुजौदाया॥

बिषयबस्यसुरनरमुनिस्वामी। मैंपावँरपसुकपिअतिकामी॥

नारिनयनसरजाहिनलागा। घोरक्रोधतमनिसिजोजागा॥

लोभपाँसजेहिगरनबँधाया। सोनरतुम्हसमानरघुराया॥

यहगुनसाधनतेंनहिहोई। तुम्हरीकृपापावकोइकोई॥

तबरघुपतिबोलेमुसुकाई। तुम्हप्रियमोहिभरतजिमिभाई॥

अबसोइजतनकरहुमनलाई। जेहिबिधिसीताकैसुधिपा

दोहा यहिबिधिहोतबतकही आएबानरजूथ॥

नाना बरन सकल दिसि देखिय प्रिय सफल पनून

बानन फल फूल अरु दैख्या। सोभा कुसुम जो कवि पद लेख्या।

करा साम पद नाव हि जाना। तिन पिय बदन नव हो हि सजाना।

कर सपति पेक तरस धनवाही। नाना कुसल पुछि जैहि नाही।

सो हरि फल छु प्रभु कै लोचनी। पिय रूप बाधि फन कुनाकन।

बै है जेहि ताहि करा धरन पाय। करु जिय अरु बहिसज हारा।

नाम करा जिय कन मान तिहोना। बान न जूप जाक धरति सोन।

जेन फल तुरत फल प्योजकु जाय। मानस है पर सतह करा धर जाय।

लाय धरत हि जो पियकु सुधि पाइ। करा धर बन सो सोहि मन ऐन।।

दोहा बचन सुनत सब बानर जहँ तहँ चले तुरंत। 15
तब सुग्रीव बोलाए अंगद नल हनुमंत

सुनहु नील अंगद हनुमाना। जामवंत मतिधीर सुजाना।
सकल सुभट मिलि दछिन जाहू। सीता सुधि पूछेहु सब काहू
मन क्रम बचन सो जतन बिचारेहु। रामचंद्र कर काज सवारेहु
भानु पीठि सेइअ उर आगी। स्वामिहि सर्ब भाव छल त्यागी
तजि माया सेइअ परलोका। मिटहिं सकल भवसंभव सोका
देह धरे कर यह फल भाई। भजिअ राम सब काम बिहाई
सोइ गुनग्य सोइ बड़भागी। जो रघुबीर चरन अनुरागी
आयसु मागि चरन सिरु नाई। चले हरषि सुमिरत रघुराई।

...हिं पवन तव प्रसिन कार॥ कन्या [illegible] प्रभु मिकह बोलाइ।
बनस्थली सिस सनोभु हपानी करन जु किंकरि देहु सहि हानी
बहु प्रकार सित हि सम जु हारेहु कहि यल यिन बोहि तुम्ह कार॥ हु
हनि मत जिम्हा सु पर लक निजाम। यल लेउ कहिहैं यनी कृपा निधान।
जन्म पि प्रभु जानत सब बाता॰ नारि नितीना बात सुन नाता

दोहा यलै सकल वनप्यो जित सनित सन गिनी प्योह
राम कर जिलव जिनमन पिसनात तपन छोह

करतु होय निस्पन सनमेहा प्रान लेहि इक इक मय पेहा
बहु प्रकार महि फारनहें नहीं फोउ कितिनि जिन हिता हि कहु घेनी
नाथि कृपा करि तिसे लक जु जानें मिलैं जलव वन गहन जु जानें

तंत्र सब आपहि कैलासुनाथ॥ मैं आवरजा बरन हीन भु नामाना
सुहृद नयन पिलोचन तहिं आहू॥ पैहउँ सीतल हिं जनि पछिताहू
नयन बूहि जो हे प्रहिं दीना॥ उठि सकल सरी घु केति नाना॥
सो सुनि गमराज हनु बना॥ जा का कमल पदनाग्ति माला॥
नाना जाति बीनयतयमिहु॥ कानपा सु नित गिम्रके हिं हो

दोहा॥ बंद्रि बनाक हुस्तो ग ३॥ प्रकुमायाय मिसीस
हियम निनाम मनमन बचं बंदत कर्ज राखन

इहाथि मान हि कपि मन माही॥ चित कमय पका जकछु नाही
कहलं गहलोम नमानि वानी॥ दुवुप्रकान जैमिलु हमानी॥
इहांनसु थिरसीत कै पा ३॥ उहां गये मानि हि कपि ना ४॥

कर्विनाजमूमिपकश्रीमत्मेगाभी: कपनेहेगावनाविप्रनहुस्योमी
श्रिडुलमनोहनरंगुद्यामाना: सहाङुसहवनक्मागावनावां
कियुवातिनिहंयनावाहफोकुडा जनमानायनाकियुमहोडा:
दोहा: जगकनानानानानाजय: जंजन नानिज्ञाना:
कियुमाकामिमेजवरनपीी: मिहुमाजुजक्मावाना:
हसिबोलेनाहुवंसजुमाना: यियिक्रीमिमिक्रोमेहनहाना:
कौसले ।हसनव्यक्रेजाडो: हमविमुवमनमातिवनक्माडो:
नामनामलाहिननाहोडजादी संगनानिसृजुमविसोहादीग:

19